चिन्तन के तीन स्तर एवं सामाजिक संगठन

(THREE STAGES OF THINKING AND SOCIAL ORGANIZATION)

कॉम्ट द्वारा प्रस्तुत चिन्तन के तीन स्तरों का नियम केवल बौद्धिक स्तर को ही प्रभावित नहीं करता बल्कि कॉम्ट ने सामाजिक इतिहास के अध्ययन के आधार पर यह दर्शाने का भी प्रयास किया कि, जैसे-जैसे समाज के चिन्तन की अवस्थाओं में परिवर्तन आता गया वैसे-वैसे समाज के संगठन का स्वरूप भी परिवर्तित होता गया। चिन्तन की अवस्थाओं के नियम पर आधारित सामाजिक संगठन के स्वरूप में होने वाले जिस परिवर्तन की चर्चा कॉम्ट ने की है उसे वे प्रगतिशील परिवर्तन के रूप में स्वीकार करते हैं। सामाजिक संगठनों में होने वाले विकासशील परिवर्तन का उल्लेख कॉम्ट ने राज्यों के स्वरूपों के आधार पर किया है जिसे चिन्तन के विभिन्न स्तरों के सन्दर्भ में निम्नांकित रूप से समझा जा सकता है :

(1) ईश्वरवादी स्तर एवं दैवीय नियम (Theological Stage and Divine Law)

आगस्त कॉम्ट ने बतलाया कि जब समाज में व्यक्ति ईश्वरीय अथवा धार्मिक आधार पर चिन्तन करता है तब सामाजिक संरचना में राजनीतिक सत्ता का स्वरूप **निरंकुश राजतन्त्र** के रूप में विद्यमान रहता है। इस अवस्था में व्यक्ति (समाज का सदस्य) यह सोचता है कि प्रत्येक प्राणी को ईश्वर ने ही पैदा किया है और उसे जिस प्रस्थिति अथवा वर्ग में जन्म दिया गया है, उसी में जीवन व्यतीत करना उसका भाग्य है। व्यक्ति यह सोचता है कि राजा को ईश्वर की विशेष कृपा प्राप्त है तथा वह ईश्वर का ही प्रतिनिधि है। इसीलिए जनता स्वयं को ईश्वर के पुत्र की भाँति मानती है और यह भी मानती है कि राजा की आज्ञा ही ईश्वर की आज्ञा (Divine Law) है। कॉम्ट का कथन है कि जब जनता राजाज्ञा को ईश्वरीय आदेश के रूप में शिरोधार्य करती है तब समाज में निरंकुश राजशाही का जन्म होता है। ऐसे समाजों में जनता राजनीति से दूर रहकर केवल राजा के आदेशों का पालन करना ही अपना नैतिक दायित्व मानती है। समाजशास्त्र के आधुनिक विचारक **टी. पारसन्स** और **ए. शिल्स** (Talcott Parsons and Edward Shills) ने इस प्रेरणा को कॉग्निटिव (Cognitive) या **'जिज्ञासात्मक प्रेरणा'** कहा है जिसमें व्यक्ति केवल विश्वास के आधार पर ही कार्य करता है। **एमण्ड** और

पॉवेल ने विश्वास के आधार पर संचालित ऐसी राजनीति को **संकीर्ण राजनीतिक संस्कृति** (Parchial Political Culture) कहा है।[1]

(2) **तात्विक स्तर एवं पुरोहितवाद** (Metaphysical Stage and Priesthood)

जब व्यक्ति घटनाओं के कार्य-कारण को जानने के लिए भौतिक और ईश्वरीय (दोनों आधारों पर) आधारों पर साथ-साथ चिन्तन करता है तब ऐसी स्थिति को कॉम्ट ने तात्विक स्तर के रूप में स्वीकार किया है। चिन्तन के इस स्तर एवं राजनीतिक संगठन में सम्बन्ध स्थापित करते हुए कॉम्ट ने बतलाया कि जब समाज तात्विक चिन्तन के स्तर में रहता है तब समाज में सत्ता के स्तर पर पुरोहितवाद की स्थापना होती है। पुरोहितवाद की अवस्था में व्यक्ति (समाज का सदस्य) अमूर्त तथ्यों अथवा सैद्धान्तिक विचारों में आस्था रखता है। **व्यक्ति** यह सोचने लगता है कि राज्य में राजा ईश्वर का प्रतिनिधि है अपितु **पुरोहित** (Priest) अथवा **पोप** (Pope) ही ईश्वर का प्रतिनिधि (Prophet of God) है। जब सिद्धान्त रूप में व्यक्ति पुरोहित को ईश्वर के प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार करने लगता है तब उसमें यह विचार भी जन्म लेने लगते हैं कि राज्य के कार्यों का संचालन स्वयं ईश्वर ही पुरोहित के माध्यम से करता है तथा राजा की शक्ति भी पुरोहित के अधीन है।

कॉम्ट ने पुरोहितवाद की इस अवस्था का विवरण राजनीतिक इतिहास में **चर्च राज्य** (Church State) की अवस्था के रूप में दिया क्योंकि पश्चिमी यूरोप में नगर राज्यों की स्थापना के पश्चात् ही **चर्च राज्य** की स्थापना हुई।[2] भारतीय समाज के ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर भी यह कहा जा सकता है कि यहाँ आदिकालीन राज्यों के बाद ईसा-पूर्व में कुछ ऐसे राज्यों की स्थापना हुई थी जिनमें पुरोहितों का वर्चस्व था। उदाहरण के लिए, चाणक्य और चन्द्रगुप्त के काल को पुरोहितवाद के अन्तर्गत रखा जा सकता है। पुरोहितवाद (Priesthood) अथवा **पोपवाद** की अवस्था में जनता निरंकुश राजसत्ता को अमान्य करते हुए यह मानने लगती है कि सामाजिक तथा राजनीतिक संगठन का संचालन पुरोहित की सलाह के आधार पर ही होना चाहिए। **एडवर्ड शिल्स** और **टॉल्काट पारसन्स** ने इस दृष्टिकोण को **विश्वासात्मक प्रेरणा** (Affective Orientation) का नाम दिया है। **एमण्ड** और **पॉवेल** ने विश्वासात्मक प्रेरणा के आधार पर निर्मित राजनीतिक संस्कृति को '**भावनात्मक राजनीतिक संस्कृति**' (Subjective Political Culture) कहा है।

(3) **प्रत्यक्षवादी स्तर एवं प्रजातन्त्र** (Positive Stage and Democracy)

आगस्त कॉम्ट ने चिन्तन के तीन स्तरों के नियम के आधार पर यह बतलाया कि जब समाज में व्यक्ति प्रत्यक्षवादी धरातल पर राज्य के कार्यों का अवलोकन एवं परीक्षण करता है तब समाज की राजनीतिक व्यवस्था का स्वरूप (Form) प्रजातान्त्रिक हो जाता है। कॉम्ट प्रजातन्त्र को एक बेहतर अथवा उत्तम राजनीतिक संगठन के रूप में स्वीकार करते हैं। **एडवर्ड शिल्स एवं टॉल्काट पारसन्स** ने इस स्तर की प्रेरणा को '**मूल्यांकित प्रेरणा**' (Evaluative Orientation) के नाम से सम्बोधित करते हुए बतलाया कि इस स्तर में समाज का संगठन विभिन्न व्यवस्थाओं के गुणों और अवगुणों के आधार पर निर्मित होता है। **एमण्ड** और **पॉवेल** ने राजनीतिक व्यवस्था पर इस मूल्यांकित प्रेरणा के प्रभाव का उल्लेख किया है। उनके मतानुसार जब किसी समाज में व्यक्ति मूल्यांकित प्रेरणा से प्रभावित होकर राजनीतिक व्यवस्था से

1 Almond & Powell : *Comparative Politics.*
2 अर्नेस्ट बार्कर : **सामाजिक तथा राजनीतिक शास्त्र के सिद्धान्त,** पृ. 15-37.

सम्बन्धित निर्णय लेते हैं तब समाज में **सहभागी राजनीतिक संस्कृति** (Participant Political Culture) का उदय होता है। आगस्त कॉम्ट ने बतलाया कि प्रत्यक्षवादी चिन्तन की अवस्था में समाज का तीव्र गति से औद्योगीकरण होने लगता है जिसके साथ-साथ समाज में प्रजातान्त्रिक मूल्यों की स्थापना होती है। कॉम्ट द्वारा प्रस्तुत उक्त विचार समाज और राज्य के परस्पर सम्बन्धों को स्पष्ट करते हैं। इन विचारों के आधार पर हम कह सकते हैं कि कॉम्ट ने तीन स्तरों के नियम द्वारा राजनीति और समाजशास्त्र के अन्तर्सम्बन्धों की ओर भी संकेत दिया।